Ravindra's IAS

भारतीय अर्थव्यवस्था

(Prelims Booklet)

UPSC & STATE PSC'S

OFFICE

102,8-9, 2nd floor, Ansal Building, Mukherjee Nagar,Delhi-110009
Mobile Number:- 8700170483, 9953101176
Website:- www.ravindrainstitute.com
Facebook / Twitter/ Instagram / Telegram- Ravindras IAS institute, YouTube-RavindraIAS

Ravindra's IAS

विषय सूची

भारतीय अर्थव्यवस्था (1-98)

- अर्थव्यवस्था के आधारभूत सिद्धांत 3
- अर्थव्यवस्था के प्रकार 10
- राष्ट्रीय आय और गणना 13
- मुद्रा 26
- मुद्रास्फीति 31
- वित्तीय बाज़ार की संकल्पना (अवधारणा) 50
- पूँजी बाजार 57
- बजट 60
- साख नियंत्रण की विधियाँ 75
- भारतीय अर्थव्यवस्था की प्रकृति या स्वभाव 81
- बेरोजगारी, निर्धनता और असमानता की समस्या 86

अर्थव्यवस्था के आधारभूत सिद्धांत

अर्थशास्त्र (इकोनॉमिक्स) क्या है?

अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान की वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग का अध्ययन किया जाता है। ***'अर्थशास्त्र'*** शब्द संस्कृत शब्दों अर्थ (धन) और शास्त्र की संधि से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- ***'धन का अध्ययन'***। किसी विषय के संबंध में मनुष्यों के कार्यो के क्रमबद्ध ज्ञान को उस विषय का शास्त्र कहते हैं, इसलिए अर्थशास्त्र में मनुष्यों के अर्थसंबंधी कार्यों का क्रमबद्ध ज्ञान होना आवश्यक है।

अर्थशास्त्र का प्रयोग यह समझने के लिये भी किया जाता है कि अर्थव्यवस्था किस तरह से कार्य करती है और समाज में विभिन्न वर्गों का आर्थिक सम्बन्ध कैसा है। अर्थशास्त्रीय विवेचना का प्रयोग समाज से सम्बन्धित विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है, जैसे:- अपराध, शिक्षा, परिवार, स्वास्थ्य, कानून, राजनीति, धर्म, सामाजिक संस्थान और युद्ध इत्यादि।

परिचय

ब्रिटिश अर्थशास्त्री अल्फ्रेड मार्शल ने इस विषय को परिभाषित करते हुए इसे ***'मनुष्य जाति के रोजमर्रा के जीवन का अध्ययन'*** बताया है। मार्शल ने पाया था कि समाज में जो कुछ भी घट रहा है, उसके पीछे आर्थिक शक्तियां हुआ करती हैं। इसीलिए समाज को समझने और इसे बेहतर बनाने के लिए हमें इसके आर्थिक आधार को समझने की जरूरत है।

लियोनेल रोबिंसन के अनुसार आधुनिक अर्थशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार है-

''वह विज्ञान जो मानव स्वभाव का वैकल्पिक उपयोगों वाले सीमित साधनों और उनके प्रयोग के मध्य अन्तर्सम्बन्धा अध्ययन करता है''।

दुर्लभता (scarcity) का अर्थ है कि उपलब्ध संसाधन सभी मांगों और जरुरतों को पूरा करने में असमर्थ हैं। दुर्लभता और संसाधनों के वैकल्पिक उपयोगों के कारण ही अर्थशास्त्र की प्रासंगिकता है। अतएव यह विषय प्रेरकों और संसाधनों के प्रभाव में विकल्प का अध्ययन करता है।

अर्थशास्त्र में अर्थसंबंधी बातों की प्रधानता होना स्वाभाविक है। परंतु हमको यह नहीं भूलना चाहिए कि ज्ञान का उद्देश्य अर्थ प्राप्त करना ही नहीं है, सत्य की खोज द्वारा विश्व के लिए कल्याण, सुख और शांति प्राप्त करना भी है। अर्थशास्त्र यह भी बतलाता है कि मनुष्यों के आर्थिक प्रयत्नों द्वारा विश्व में सुख और शांति कैसे प्राप्त हो सकती है। सब शास्त्रों के समान अर्थशास्त्र का उद्देश्य भी विश्वकल्याण है। अर्थशास्त्र का दृष्टिकोण अंतर्राष्ट्रीय है, यद्यपि उसमें व्यक्तिगत और राष्ट्रीय हितों का भी विवेचन रहता है। यह संभव है कि इस शास्त्र का अध्ययन कर कुछ व्यक्ति या राष्ट्र धनवान हो जाएँ और अधिक धनवान होने की चिंता में दूसरे व्यक्ति या राष्ट्रों का शोषण करने लगें, जिससे विश्व की शांति भंग हो जाए। परंतु उनके शोषण संबंधी ये सब कार्य अर्थशास्त्र के अनुरूप या उचित नहीं कहे जा सकते, क्योंकि अर्थशास्त्र तो उन्हीं कार्यो का समर्थन कर सकता है, जिसके द्वारा विश्वकल्याण की वृद्धि हो। इस विवेचन से स्पष्ट है कि ***अर्थशास्त्र की सरल परिभाषा इस प्रकार होनी चाहिए-अर्थशास्त्र में मुनष्यों के अर्थसंबंधी सब कार्यो का क्रमबद्ध अध्ययन किया जाता है। उसका ध्येय विश्वकल्याण है और उसका दृष्टिकोण अंतर्राष्ट्रीय है।***

परिभाषा

जिसमें धन सम्बंधित क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, अर्थशास्त्र कहलाता है। अर्थशास्त्र की विषय-सामग्री का संकेत इसकी परिभाषा से मिलता है। अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो मानव के स्वभाविक वैकल्पिक उपयोग करने वाले साधनों और उनके प्रयोग के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन कराता हैं।

- प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने 1776 में प्रकाशित अपनी पुस्तक (An enquiry into the Nature and the Causes of the Wealth of Nations) में अर्थशास्त्र को धन का विज्ञान माना है।
- डॉ. मार्शल ने 1890 में प्रकाशित अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र के सिद्धान्त (Principles of Economics) में अर्थशास्त्र की कल्याण सम्बन्धी परिभाषा देकर इसको लोकप्रिय बना दिया।
- ब्रिटेन के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री लार्ड राबिन्स ने 1932 में प्रकाशित अपनी पुस्तक, ''An Essay on the Nature and Significance of Economic Science'' में अर्थशास्त्र को दुर्लभता का सिद्धान्त माना है। इस सम्बन्ध में उनका मत है कि मानवीय आवश्यकताएं असीमित है तथा उनको पूरा करने के साधन सीमित है।
- आधुनिक अर्थशास्त्री सैम्यूल्सन (Samuelson) ने अर्थशास्त्र को विकास का शास्त्र (Science of Growth) कहा है।

अर्थव्यवस्था (Economy)

किसी राष्ट्र द्वारा अपने नागरिकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करने के उद्देश्य से उपलब्ध संसाधनों का समुचित नियोजन करते हुए, मुद्रा (Money) को केंद्र में रखकर बनाई गई व्यवस्था ही अर्थव्यवस्था कहलाती है। ***'अर्थव्यवस्था'*** शब्द को किसी देश के साथ जोड़कर प्राय: पूर्ण बनाया जाता है, जैसे- भारतीय अर्थव्यवस्था, अमेरिकी अर्थव्यवस्था आदि।

अर्थव्यवस्था, अर्थशास्त्र में व्यापक रूप से प्रयोग होने वाली अवधारणा है जिसका अभिप्राय किसी क्षेत्र विशेष में प्रचलित आर्थिक क्रियाओं की प्रकृति एवं उनके स्तर से होता है। वह क्षेत्र एक गाँव, राज्य या संपूर्ण देश भी हो सकता है। आर्थिक क्रियाओं के अंतर्गत उत्पादन, उपभोग, निवेश तथा विनिमय को शामिल किया जाता है।

व्यष्टि अर्थशास्त्र (Micro Economics):

"Micro" शब्द का अर्थ अत्यंत सूक्ष्म होता है। अत: व्यष्टि अर्थशास्त्र अत्यंत सूक्ष्म स्तर पर अर्थशास्त्र के अध्ययन का अर्थ प्रकट करता है। इसका वास्तविक अर्थ क्या है? एक समाज जिसमें सामूहिक रूप से अनेक व्यक्ति सम्मिलित हैं, प्रत्येक अकेला व्यक्ति उसका एक सूक्ष्म भाग है। इसलिये एक व्यक्ति द्वारा लिये गये आर्थिक निर्णय व्यष्टि अर्थशास्त्र की विषय वस्तु हो जाते हैं।

समष्टि अर्थशास्त्र (Macro Economics):

'Macro' शब्द का अर्थ है - बहुत बड़ा। एक व्यक्ति की तुलना में समाज अथवा देश अथवा सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था बहुत बड़ी है। इसलिये सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर लिये गये निर्णय समष्टि अर्थव्यवस्था की विषयवस्तु है। सरकार द्वारा लिये गये आर्थिक निर्णयों का उदाहरण लीजिये। हम सभी जानते हैं कि सरकार पूरे देश का प्रतिनिधित्व करती है, केवल एक व्यक्ति का नहीं। इसलिये सरकार द्वारा लिये गये निर्णय सम्पूर्ण समाज की समस्याओं को हल करने के लिये होते है।

- वे इच्छाएं जिनके लिये हमारे पास पर्याप्त धन हो और जिन पर हम खर्च करने को तत्पर हों, आवश्यकताएं कहलाती हैं।
- आवश्यकताओं की तुष्टि वस्तु और सेवाओं द्वारा होती है।
- आर्थिक आवश्यकताओं की तुष्टि उन वस्तुओं और सेवाओं से होती हैं जो बाजार से कीमत चुका कर खरीदी जाती है।
- गैर-आर्थिक आवश्यकताओं की तुष्टि उन वस्तु और सेवाओं से हाती है जो कीमत चुका कर बाजार से नहीं खरीदी जाती।
- नये-नये अविष्कारों के साथ-साथ नई-नई आवश्यकताओं का उदय होता है और उनमें वृद्धि होती है।
- कुछ आवश्यकताएं जीवन के अस्तित्व के लिये आवश्यक होती हैं। इन्हें अनिवर्यताएं कहते हैं।
- ऐसी आवश्यकताएं जो हमारे जीवन को सरल तथा सुखमय बनाती हैं सुविधाएं कहलाती हैं।
- कुछ आवश्यकताएं हमें आनन्द की अनुभूति कराती हैं परन्तु उनकी तुष्टि कीमती वस्तुओं द्वारा होती है, विलासिताएं कहलाती हैं।
- यद्यपि एक आवश्यकता की तुष्टि सम्भव है, संसाधनों की दुर्लभता के कारण सभी आवश्यकताओं की तुष्टि सम्भव नहीं है।

वस्तुओं और सेवाओं में भेद

मानवीय आवश्यकताओं की तुष्टि के लिये वस्तुएं और सेवाएं दोनों ही महत्वपूर्ण हैं। आइये, अब इन दोनों के अन्तर को समझने का प्रयास करें। इनके बीच निम्नलिखित मुख्य अन्तर हैं:

वस्तुएं

1. ये दृश्य होती हैं - इन्हें देखा और छुआ जा सकता है।
2. इनके उत्पादन और उपभोग में समय का अन्तर होता है। पहले इनका उत्पादन होता है और फिर इनका उपभोग।
3. इनका संग्रह किया जा सकता है। जब आवश्यक हो तो इनका प्रयोग किया जा सकता है।
4. इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानान्तरित किया जा सकता है।

आइये, हम एक वस्तु ***(कुर्सी)*** का उदाहरण लेकर इन बातों को स्पष्ट करें। आप कुर्सी को देख और छू सकते हैं। इसे बढ़ई ने अपनी कार्यशाला में बनाया था। आप बाजार से खरीद लाए और इसका प्रयोग कर रहे हैं। अत: इसके उत्पादन और उपभोग में समय का अन्तर आ जाता है। यदि कुछ समय तक आपको इसकी आवश्यकता नहीं हो तो आप इस कुर्सी को किसी गोदाम में रख सकते है। जब आवश्यकता हो फिर गोदाम से निकालकर प्रयोग कर सकते हैं। आप इसे किसी अन्य व्यक्ति